Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

BA Part I(H)
Paper I

सामाजीकरण का सिद्धान्त (मीड) ⇒ मीड ने mind, self and society में सामाजीकरण के सिद्धान्त को स्पष्ट किया है। मीड का मानना है कि व्यक्ति ही समाज का निर्माण है जिसमें विभाग और स्व होता है। 'स्व' मौलिक रूप से एक सामाजिक संरचना है और यह सामाजिक अनुभवों के कारण ही पैदा होता है। 'स्व' के जन्म के बाद ही व्यक्ति सामाजिक अनुभव करता है। मीड ने उस प्रक्रिया का भी उल्लेख किया है जिसके द्वारा 'स्व' का विकास होता है और व्यक्ति तब दूसरों के विचारों को ग्रहण करता है। जन्म के समय बच्चा एक जैविकीय व्यक्ति होता है जिसमें बुद्धि का अभाव होता है। अतः वह आन्तरिक प्रेरणाओं से प्रेरित होकर ही क्रियाएं करता है। धीरे-धीरे परिवार एवं अन्य समूहों के सम्पर्क के कारण बच्चे को यह समझ पैदा होने लगती है कि उससे लोग किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करते हैं और उसके व्यवहारों का क्या अर्थ लगाया जाता है। इस प्रकार बच्चे का 'स्व' व्यवहार से प्रभावित होने लगता है। इसी को वह 'सामान्यकृत अन्य' (generalized others) कहा जाता है। 'सामान्यकृत अन्य' का अर्थ है - किसी व्यक्ति की स्वयं के बारे में वह धारणा जो दूसरे लोग उसके बारे में रखते हैं। अर्थात् - दूसरे व्यक्ति उसके बारे में

जो निर्णय लेते हैं और उससे जो अपेक्षाएं करते हैं और इसका वह आन्तरीकरण करता है, उसे ही 'सामान्यकृत अन्य' कहते हैं। व्यक्ति में 'आत्म चेतना' का विकास किस प्रकार से होता है, इसे स्पष्ट करने के लिए मीड ने I तथा me शब्दों का प्रयोग किया है। इसलिए इस संप्रत्यय को मैं तथा मुझे का सिद्धान्त भी कहते हैं। मैं का अर्थ व्यक्ति द्वारा दूसरों के प्रति किये जाने वाले व्यवहार से है तथा मुझे का अर्थ है व्यक्ति द्वारा किये गये व्यवहार पर दूसरों की प्रतिक्रिया जिसे व्यक्ति आन्तरीकृत करता है। मैं और मुझे में आन्तःक्रिया के कारण ही स्व का विकास होता है। प्रारम्भ में ये दोनों धारणाएं एक दूसरे से अलग होती है, किन्तु परिवार एवं समाज के सम्पर्क के कारण उनमें समानता स्थापित होने लगती है और वे एक ही चीज के दो पहलू हो जाते हैं।

अनुकरण, संकेत एवं भाषा के माध्यम से बच्चा दूसरों के व्यवहारों को ग्रहण करता है और उसमें विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभाने की क्षमताएं पैदा हो जाती हैं। इसी स्थिति को मीड 'आत्म का विकास' कहते हैं।